2 दो प्रतिभाएँ

कहानी

प्रस्तावना समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार के कलाकार अर्थात् प्रतिभाएँ होती हैं और वे भली-भाँति अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन भी करते हैं, परंतु कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जो कलाकार तो होते हैं, परंतु समाज से उन्हें कोई सरोकार नहीं होता।

प्रतिबिंब इस पाठ में भी दो प्रतिभाएँ हैं वे दोनों साथ रहते हुए भी एक साथ नहीं रहते। इनमें एक समाज सेविका है और दूसरी चित्रकार। दोनों ही एक-दूसरे के काम में बिल्कुल रूचि नहीं रखती।

परिकल्पना प्रत्येक मनुष्य की अपनी एक सोच होती है और वह उस सोच के आधार पर कार्य करता है। परंतु यदि हम किसी को जीवन दान देते हैं या समाज की सेवा में समर्पित होते हैं तो वही सबसे बड़ा धर्म होता है।

एक लड़की जिसका नाम आरती था, वह चित्रकार थी और दूसरी लड़की जिसका नाम नेहा था, वह समाज सेविका थी। दोनों लड़कियाँ एक साथ रहती थीं। लेकिन दोनों को ही एक-दूसरे के कामों में बिल्कुल रूचि नहीं थी। आरती का जैसे ही कोई चित्र पूरा होता था तो वह तुरन्त नेहा को दिखाती चाहे नेहा उस समय सो ही क्यों न रही हो। आरती के जगाने पर नेहा झुँझला जाती, लेकिन आरती को इस बात से कोई फर्क न पड़ता था एक दिन वह अपना चित्र पूरा होने की खुशी में चहककर नेहा से कहने लगी, नेहा देख न, मैंने कितना सुंदर चित्र बनाया है; ''देख लेना पहला इनाम मुझे ही मिलेगा।'' नेहा ने फिर झुँझला कर कहा ''तेरे इस चित्र में मुझे तो बिल्कुल समझ नहीं आ रहा है कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर बनाई है।''

आरती ने झल्लाकर नेहा से कहा, ''तो तुझे यह कोई जीव नज़र आ रहा है? अरे! नेहा ज़रा अच्छी तरह से देख और समझने की कोशिश कर।''

''अरे, यह क्या ? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान – सब एक दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। ये क्या घनचक्कर बनाया है।'' चित्र रखते हुए नेहा ने कहा।

''जरा सोचकर तो बता कि ये चित्र किसका प्रतीक है?'' नेहा ने आरती से कहा कि ''ये चित्र तेरी बेवकूफी का प्रतीक है।''

''अरे जनाब! यह चित्र आज की दुनिया के कन्फ्यूजन का प्रतीक है, समझी।''

अपने को बहुत बड़ी समाज सेविका समझती थीं।''

''जा-जा समझते हैं तो समझते रहें। तू जाकर सारी दुनिया में ढिंढ़ोरा पीटना, तेरी तरह लकीरें खींचकर तो समय बर्बाद नहीं करती।'' नेहा ने कहा और पैरों में चप्पल डालकर बाहर मैदान में चली गई जहाँ एक छोटी-सी पाठशाला बनी हुई थी।

नेहा ने पाठशाला से लौटकर कमरे में बहुत धीरे से प्रवेश किया, जिससे आरती की नींद न खराब हो पर आरती जाग रही थी। दोपहर से ही नेहा बिना कुछ खाए-पीये बाहर थी, उसे नींद कैसे आती भला? मेस से उसका खाना लाकर उसने मेज पर ढककर रख दिया था। नेहा के आते ही वह उठ बैठी और पूछा, ''क्या हुआ नेहा? बहुत देर लग गई।''

''वह बच्चा नहीं बचा, आरती। किसी भी तरह उसे नहीं बचा सके।'' और उसका स्वर किसी गहरे दुःख में डूब गया। आरती खाना गरम करने के लिए स्टोव जलाने लगी तो नेहा बोली ''रहने दो आरती, मैं नहीं खाऊँगी, मुझे ज़रा भी भूख नहीं है।'' और नेहा की आँखें फिर से छलछला आईं।

बहुत ही स्नेह से आरती ने नेहा की पीठ थपथपाते हुए कहा, '' जो होना था सो हो गया, अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-बहुत खा ले।''

''नहीं आरती, नहीं रहने दे, बस तू लैम्प बुझा दे।''उसके बाद दो दिन तक नेहा बेहद उदास रही, लेकिन समय के साथ-साथ वह गम भी जाता रहा, और सब काम ज्यों का त्यों चलने लगा।

चार बजे ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आईं, पर नेहा नहीं आई। आरती चाय के लिए उसका इंतजार कर रही थी। ''पता नहीं ये लड़की भी न जाने कहाँ-कहाँ अटक जाती है। ''अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गई। चल, बना चाय।'' तभी दरवाज़े से अंदर आते हुए नेहा ने कहा।

''तेरे विकास की चिट्ठी आई है।''

''क्या! तूने तो पढ़ ली होगी।''

''चल हट, ऐसी बोर चिट्ठियाँ पढ़ने का फालतू समय किसके पास है ? तुम्हारी चिट्ठियों में रहता ही क्या है जो कोई पढ़े। बड़े-बड़े आदर्श की बातें, मानो खत न हुआ लैक्चर हुआ।''

''अच्छा-अच्छा, तू लिखा करना रसभरी चिट्ठियाँ, हमें तो वह सब आता नहीं। वह लिफ़ाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो आरती बोली, '' नेहा आज मेरे पिता जी का भी पत्र आया है, लिखा है जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जाए, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बेटी ठहरी! तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है। पर सच कहती हूँ, मुझे तो यह सारी कला इतनी निरर्थक लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।''

''तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?'' तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, बस चौबीस घंटे अपने रंग और तूलिकाओं में डूबी रहती है। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं है तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्त्व नहीं रखती। बस हर घड़ी, हर जगह और हर चीज़ में से तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।''

''अरे मेरी इस लगन को देखकर ही तो गुरुजी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं, जब हिंदुस्तान के कोने-कोने में मेरी शोहरत गूँज उठेगी। अमृता शेरगिल की तरह मेरा नाम भी गूँज उठे, बस यही तमन्ना है।''

''कागज पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िन्दगी क्यों नहीं बना देती, तेरे पास तो सामर्थ्य है, साधन है।''

आरती ने कहा , '' वह काम तो मैंने तेरे और विकास के लिए छोड़ रखा है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने निकल जाना।''

फिर दोनों में कला और जीवन को लेकर लंबी-लंबी बहस होती और आरती अंत में कान पर हाथ रख कर उठ जाती, '' अच्छा-अच्छा बंद कर यह लैक्चर बाजी। बोर कहीं की।'' पिछले पाँच सालों से इसी प्रकार चल रहा था। दस-बीस दिन बाद दोनों में अपनी-अपनी दिनचर्या, उद्देश्यों को लेकर गरमागरम बहस हो जाती लेकिन न वह उसकी बात का लोहा मानती थी, न वह उसकी बात की कायल होती थी।

तीन दिन से मूसलाधार बारिश होने के कारण बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी। नेहा सारा दिन उनके लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती तो एक दिन आरती ने कह ही दिया, ''तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती ही रहती है। फेल हो गई तो ?

नेहा बोली, आज शाम को ही एक स्वयं-सेवकों का दल जा रहा है, प्रिंसीपल से अनुमति लेकर मैं भी उनके साथ जा रही हूँ। शाम को नेहा चली गई। पंद्रह दिन बाद काफी खस्ता हालत में लौटकर आई। उस समय आरती अपने गुरुदेव के पास गई हुई थी।

शाम को आरती लौटी तो नेहा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई '' गनीमत है, लौटकर आ गई।

नेहा, मैं अगले बुध को घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।'' उल्लास आरती के स्वर में छलका पड़ रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी आरती, पाँच साल मैं तेरे साथ रहते-रहते यह बात भूल ही गई कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी ?''

रहा।

''क्या सोच रही है नेहा'', आरती ने नेहा से पूछा? ''कुछ नहीं,'' नेहा ने कहा।

उस दिन रात में भी नेहा अपने और आरती के बारे में ही सोचती रही। दोनों के आचार-विचार, रहन-सहन, रूचि आदि में कितना अंतर था, फिर भी कितना स्नेह था दोनों में। सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की नजर से देखता था। लेकिन उसने कभी बुरा नहीं माना। आरती अब मुझसे इतनी दूर चली जाएगी।

ये दो महीने भी कैसे निकालेगी? यही सब सोचते-सोचते नेहा को नींद आ गई।

आज आरती को जाना था। हॉस्टल से उसे बड़ी शानदार विदाई मिली। नेहा सवेरे से ही आरती का सारा सामान ठीक कर रही थी। आरती एक-एक करके सबसे मिलकर गुरुजी के घर की तरफ चली गई। तीन बज गये लेकिन वह लौटी नहीं। नेहा उसका काम समाप्त करके उसकी राह देख रही थी। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली है। नेहा ने सोचा वह खुद जाकर देख आए कि आखिर बात क्या हो गई। तभी हड़बड़ाती-सी आरती ने प्रवेश किया, ''बड़ी देर हो गई ना। अरे क्या करूँ, बस, कुछ ऐसा हो गया कि रूकना ही पड़ा।''

तब तक और भी लड़कियाँ उसके कमरे में आ गईं। सबने एक साथ पूछा, सुनें तो, ''आखिर ऐसा क्या हो गया, जो रूकना ही पड़ा।''

''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे दृश्य में कि मैं अपने आपको रोक नहीं सकी। एक रफ-सा स्केच बना ही डाला। बस, इसी में देर हो गई। चर्चा इसी पर चल पड़ी, ''कैसे मर गई? कल तो उसे देखा था।'' इस सारी चर्चा में नेहा कब खिसक गई, कोई जान ही नहीं पाया।

साढ़े चार बजे आरती हॉस्टल के फाटक पर आ गई, पर तब तक नेहा का कुछ पता नहीं था। स्टेशन पर भी आरती की आँखें नेहा को ढूँढ़ती रहीं लेकिन नेहा नहीं आई।

विदेश जाकर आरती की लगन ने उसकी कला में निखार ला दिया। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मची हुई थी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र ने तो आरती को शोहरत की बुलंदी पर पहुँचा दिया। पहले वर्ष तो नेहा से पत्र-व्यवहार नियमित रूप से चला, फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। नई कल्पनाएँ, उसे नवीन सृजन की प्रेरणा देतीं और वह उन्हीं में खोयी रहती। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। उसके 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र तो कई प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार पा चुका था।

तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो उसका बड़ा स्वागत हुआ। पिता अपनी इकलौती बिटिया की कामयाबी पर गद्गद् थे – समझ नहीं पा रहे थे कि उसे कहाँ-कहाँ उठाएँ।

दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट नेहा से हो गई। ''नेहा!'' कहकर वह उसके गले से लिपट गई। ''तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया नेहा।''

''चित्रों को नहीं आरती को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गई।

''अरे! ये बच्चे किसके हैं ?'' दो प्यारे से बच्चे नेहा से सटे खड़े थे। लड़का दस साल और लड़की आठ साल की होगी।

'' ये मेरे बच्चे हैं, और किसके! ये तुम्हारी आरती मौसी है, नमस्ते करो अपनी मौसी को।'' नेहा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़ी अदा से आरती से नमस्ते किया लेकिन आरती इस सारी बातों का कुछ तुक नहीं मिला पा रही थी। वह आश्चर्य से कभी बच्चों को देखती, कभी नेहा को। ज़रा-सी देर में दोनों बच्चे आरती से घुल मिल गये। आरती उन्हें समझा-समझाकर अपने चित्र दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन की तस्वीर के सामने आ पहुँचे। आरती ने कहा ''यह वही तस्वीर है नेहा, जिसने मुझे प्रसिद्धि दी ।''

बच्चे उस तस्वीर के बारे में आरती से सवाल करते जा रहे थे। आरती उनका जवाब देती जा रही थी। लेकिन बच्चों के लिए अधिक देर उस तस्वीर को देखना असहनीय हो उठा। तभी नेहा के पति विकास आ पहुँचे, परिचय हुआ तभी नेहा ने दोनों बच्चों को उसके हवाले करते हुए कहा'' आप जरा बच्चों को प्रदर्शनी दिखाइए, मैं आरती को घर लेकर चलती हूँ। '' आरती ने नेहा से फिर पूछा सच-सच बता नेहा ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?'' नेहा बोली ''बता दूँ?'' ये उसी भिखारिन के बच्चे हैं। ''क्या ?'' विस्मय से आरती की आँखें फैली की फैली रह गई। क्या सोच रही है, आरती?'' ''कुछ नहीं'' मैं-मैं सोच रही थी कि पर शायद शब्द उसके विचारों में ही रह गए।

शिक्षण संकेत – कक्षा में बच्चों को बताएँ कि इस पाठ से उन्हें ये सीख मिलती है कि –
''मानवता की जीत तो तभी है जब आप किसी को जीवन-दान दे सकें।''

पढ़ो और लिखो – प्रिंसीपल, कन्फ्यूजन, लेक्चर, इकलौती, आइडिया, स्टेशन, गलतफहमी, चिट्ठियाँ, निरर्थक, प्रदर्शनी।

शब्दार्थ :- **इनाम** – पुरस्कार (reward), **योनि** – भिन्न-भिन्न रूप में जन्म लेना (life forms), **नजर** – दिखना (sight), **कन्फ्यूजन** – दुविधा (confusion), **प्रतीक** – प्रतिबिंब (reflaxtion), **निरर्थक** – बेमतलब (senseless), **आइडिया** – विचार (thought), **मॉडल** – माडल (model), **शोहरत** – प्रसिद्धि (fame), **कायल** – पसंद करना (to like), **इम्तिहान** – परीक्षा (examination), **उल्लास** – खुशी (pleasure), **स्केच**– रेखा चित्र (Sketch), **बुलंदी** – ऊँचाई (height).

वर्तनी वैभिन्य – तुरंत - तुरन्त, सुंदर - सुन्दर, हिंदुस्तान, - हिन्दुस्तान, बुलंदी - बुलन्दी